जहाँदारशाह

पुस्तकालय,
क्रम संख्या ....
पु० संख्या ...
(झाँसी)

वृन्दावनलाल वर्मा

मयूर प्रकाशन, झाँसी।

प्रकाशक :
सत्यदेव वर्मा, बी. ए. एल-एल. बी.
मयूर प्रकाशन झाँसी

द्वितीय संस्करण—१९५५
तृतीय संस्करण-१९५९
चतुर्थ संस्करण—१९६३
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
मूल्य ।।।)

मुद्रक:—
रामसेवक खड्ग,
स्वाधीन प्रेस, झाँसी ।

Scanned with OKEN Scanner

नाटक के पात्र

पुरुष—

जहांदारशाह—दिल्ली का वादशाह;
(२६-३-१७१२ से ११-२-१७१३ तक)
जुलफिकार—जहांदारशाह का वजीर
सरदार, गायक, वादक, सिपाही, दरवारी, गाड़ीवान,
शराब का दूकानदार, कुँजड़े, लड़के,
भीड़ के लोग इत्यादि ।

स्त्री—

लालकुँवर—असली नाम इमतियाज महल वेगम,
जहांदारशाह की रखेली वेश्या ।
जुहरा—कूँजड़ी
कूँजड़ीं, नर्तकियां इत्यादि ।

Scanned with OKEN Scanner

डा० वृन्दावनलाल वर्मा-साहित्य

उपन्यास

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई	६)
माधव जी सिन्धिया	६)
मृगनयनी	५)
अमरबेल	५)
कचनार	४॥)
टूटे कांटे	४।)
गढ़कुण्डार	४)
विराटा की पद्मिनी	४)
भुवन विक्रम	३॥)
अचल मेरा कोई	३॥।)
सोना	३)
आहत	३)
अहल्याबाई	२।)
कुण्डली चक्र	२।)
संगम	२।)
उदय किरण	२)
रामगढ़ की रानी	२)
प्रत्यागत	१॥)
मुसाहिब जू	१॥)
प्रेम की भेंट	१।)
लगन	१।)
कभी न कभी	१।)

कहानी संग्रह

दबेपांव	२)
ऐतिहासिक कहानियां	१)
शरणागत	१।)
कलाकार का दण्ड	१।)
१८५७ के अमरवीर	१)
मेंढकी का व्याह	१
अंगूठी का दान	१।
रश्मि समूह	१
तोपी	॥।

नाटक

झांसी की रानी	२
हंस मयूर	२।
पूर्व की ओर	२।
ललितविक्रम	१॥।
राखी की लाज	१।
केवट	१।
खिलौने की खोज	१।
नीलकण्ठ	१।
वीरबल	१।
फूलों की बोली	१।
बांस की फांस	१।
निस्तार	१
मंगलसूत्र	१
देखा देखी	॥।=

एकाङ्की

कनेर	१
काश्मीर का कांटा	१
लो भाई पंचो लो	॥।
पीले हाथ	॥।)
जहांदारशाह	॥।)
सगुन	॥।)

स्फुट

बुन्देलखण्ड के लोकगीत	॥)

वर्मा जी को
उनके
अमर साहित्य पर
भारत सरकार
उत्तर प्रदेश राज्य
म० प्र० राज्य
तथा
साहित्यकार-संसद
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
नागरी प्रचारिणी सभा
के
सर्व श्रेष्ठ पुरस्कार
भेंट किये जा
चुके हैं।

प्राप्ति स्थान

मयूर प्रकाशन झांसी

Scanned with OKEN Scanner